IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, December 2024

परिवार एवं समुदाय का अधिगमकर्ताओ पर प्रभाव

डॉ अवदेश आड़ा

डीन (प्रोफेसर) शिक्षा-संकाय

माधव विश्वविध्याल, पिंडवाड़ा सिरोही, राजस्थान

शिक्षा के साधन में परिवार का सर्वप्रथम स्थान होता है क्योंकि परिवार ही बालक की प्रथम पाठशाला होती है और माँ उसकी प्रथम गुरु। परिवार समाज का अत्यन्त महत्वपूर्ण प्राथमिक समूह है। इसका अस्तित्व हर युग में और प्रत्येक समाज में किसी न किसी रूप में विद्यमान रहा है। यद्यपि परिवार का विकास मनुष्य के संरक्षण और पालन-पोषण के लिए हुआ है, लेकिन यह शिक्षा का अत्यन्त प्रभावी अनौपचारिक अभिकरण भी है। अतः यहाँ परिवार के अर्थ, महत्व, शैक्षिक भूमिका और कार्यों का अध्ययन करना आवश्यक है।

परिवार की संकल्पना व परिभाषा

शिक्षा के साधन में परिवार का सर्वप्रथम स्थान होता है क्योंकि परिवार ही बालक की प्रथम पाठशाला होती है। परिवार आंग्लभाषा के Family शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। Family शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के Famulus नामक शब्द से हुई। जिसका अभिप्राय Servant से है किन्तु जिस अर्थ में परिवार शब्द की व्युत्पत्ति हुई है परिवार का यह सबसे सरल रूप है। इसका जटिल रूप भारत के संयुक्त परिवारों में देखने को मिलता है। उस अर्थ में अब परिवार का अर्थ नहीं लगाया जाता है। आधुनिक अर्थ में परिवार समाज की एक ऐसी इकाई या आधारभूत सामाजिक समूह है जिसमें पति-पत्नी तथा उनके अविवाहित बच्चे तथा उनके साथ-साथ अन्य सम्बन्धी सम्मिलित रहते हैं जो उत्तरदायित्व एवं स्नेह की भावना से बंधे रहते हैं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, December 2024

क्लेयर के अनुसार, "परिवार से हम सम्बन्धों की वह व्यवस्था को समझते हैं जो माता-पिता तथा उनकी सन्तानों के बीच पाई जाती है।"

बोगार्डस के अनुसार, "परिवार समूह प्रथम मानव पाठशाला है। प्रत्येक व्यक्ति अविधिक शिक्षा सामान्य रूप से परिवार में ही प्रारम्भ होती है। बालक का बहुत महत्वपूर्ण समय परिवार में ही व्यतीत होता है।"

मैकाइवर और पेज के अनुसार, "परिवार संतान की उत्पत्ति और पालन- पोषण की व्यवस्था के लिए पर्याप्त निश्चित एवं स्थायी यौन सम्बन्ध द्वारा परिभाषितसमूह है।"

अतः स्पष्ट है कि परिवार का जीवन में बहुत अधिक महत्व है परिवार ही बालक की प्रथम पाठशाला एवं अद्वितीय अनौपचारिक शिक्षा का साधन है। इसमें निम्न विशेषतायें होती हैं-

- परिवार सार्वभौमिक समिति
- परिवार भावात्मक सम्बन्धों पर आधारित
- परिवार सामाजिक संरचना का केन्द्रीय तत्व
- परिवार एक प्रकार्यात्मक इकाई
- परिवार एक नियन्त्रणकारी संस्था
- त्याग एवं बलिदान का केन्द्र
- विवाह पर आधारित संस्था
- प्राचीनतम सामाजिक संस्था
- स्नेह, परोपकार आदि गुणों का केन्द्र
- मौलिक अनुसंधान का केन्द्र
- विवाह-सम्बन्ध
- यौन सम्बन्धों के नियंत्रण में सहायक

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, December 2024

- विवाह का एक स्वरूप
- अर्थव्यवस्था का साधन
- सामान्य निवास
- परिवार की स्थायी व अस्थायी प्रकृति

आगबर्न और निमकॉफ के अनुसार, "संतान सहित अथवा सन्तानहीन पति-पत्नी अथवा सन्तान रहित एक पुरुष या एक स्त्री के कम या अधिक स्थायी समिति परिवार है।"

परिवार की विस्तृत परिभाषा बर्जेस और लॉक ने दी, "एक परिवार विवाह, रक्त अथवा दन्तकान्त के बन्धनों से संगठित व्यक्तियों का समूह है जो एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं और पति-पत्नी, माँ-बाप, पुत्र-पुत्री, भाई-बहन की सामाजिक भूमिकाओं में अन्तः क्रिया और अन्तः संचार करते हैं तथा एक सामान्य संस्कृति का निर्माण एवं रक्षा करते हैं।"

संक्षेप मे हम परिवार को जैविकीय संबंधों पर आधारित एक सामाजिक समूह के रूप परिभाषित कर सकते हैं जिसमें माता-पिता और बच्चे होते हैं तथा जिसका उद्देश्य अपने सदस्यों के लिए सामान्य निवास, आर्थिक सहयोग, यौन-संतुष्टि और प्रजनन, सामाजीकरण एवं शिक्षण आदि की सुविधाएँ जुटाना है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवार का * तात्पर्य एक घर में रहने वाले सदस्यों से जिनके मध्य विवाह या रक्त का सम्बन्ध पाया * जाता है। ये सभी सदस्य परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति क्रिया-प्रतिक्रिया विचार-विनिमय, अधिकार और कर्तव्य के सूत्र में बंधे रहते हैं। प्रत्येक परिवार की अपनी विशिष्ट संस्कृति और परम्परायें होती हैं। बालक परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अन्तः क्रिया प्रतिक्रिया के द्वारा बोलना, भाषा-ज्ञान, आचरण करना तथा अन्य बातें सीखते हैं। परिवार बालक के सामाजीकरण की संस्था है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, December 2024

परिवार के प्रकार

मानव समाज के विकास के साथ-साथ परिवार के भी अनेक रूप अस्तित्व में आये हैं। प्रत्येक स्थान की भौगोलिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों ने भिन्न-भिन्न प्रकार की परिवार व्यवस्था को जन्म दिया है। सदस्यों की संख्या, विवाह का स्वरूप, स्त्री-पुरुष की सत्ता निवास, वंशनाम आदि के आधार पर परिवार का वर्गीकरण किया जाता है। भारत में पाये जाने वाले विभिन्न प्रकार के परिवारों का वर्गीकरण इस प्रकार से है।

1. संख्या के आधार पर -

(क) केन्द्रीय परिवार या नाभिक परिवार, (ख) संयुक्त परिवार, (ग) विस्तृत परिवार।

2. निवास के आधार पर -

(क) पितृ स्थानीय परिवार, (ख) मातृस्थानीय परिवार, (ग) नव स्थानीय परिवार, (घ) मातृ-पितृ स्थानीय परिवार, (ड) मामा स्थानीय परिवार, (च) द्वि-स्थानीय परिवार ।

3. अधिकार के आधार पर -

(क) पितृ सत्तात्मक परिवार, (ख) मातृ सत्तात्मक परिवार।

4. उत्तराधिकार के आधार पर -

(क) पितृ-मार्गी परिवार, (ख) मातृ-मार्गी परिवार।

5. वंशनाम के आधार पर -

(क) पितृ वंशीय परिवार, (ख) मातृ-वंशीय परिवार, (ग) उभयवाही परिवार, (घ) द्वि-नामी परिवार।

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 7.53

Volume 4, Issue 2, December 2024

विवाह के आधार पर -

(क) एक विवाही परिवार, (ख) बहु-विवाही परिवार जैसे-बहुपत्नी परिवार, बहुपति परिवार, समूह-विवाही परिवार, भ्रातृ बहुपतिक परिवार, अभ्रातृ बहुपतिक परिवार।

अन्य रूप-

(क) जन्म-मूलक परिवार, (ख) प्रजनन मूलक परिवार, (ग) समरक्त परिवार, (घ) विवाह सम्बन्धी परिवार, (ड) ग्रामीण परिवार, (च) नगरीय परिवार।

बालक की शिक्षा मे परिवार या गृह का महत्व

व्यक्ति के जीवन में परिवार का महत्व वास्तव में असाधारण है। श्री एलमर (Elmer) का कथन है कि आज का मानव कितने ही अनोखे आविष्कार कर रहा है फिर भी परिवार से भिन्न ऐसे दूसरे समर्थ संगठन का आविष्कार अब तक नहीं रक पायाजिस पर परिवार के आधारभूत कार्यों को निश्चित होकर सौंपा जा सके।

बालक की शिक्षा में परिवार या गृह का महत्वपूर्ण स्थान है। बालक परिवार मेंही जन्म लेता है और परिवार में ही उसका विकास होता है। मानव प्राणी का बालक जन्म से लेकर कुछ वर्षों तक पूर्णतया असहाय होता है। अतः वह कई वर्षों तक चलने-फिरने, भोजन और शौच आदि अनेक कार्यों के लिए अपने माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों पर निर्भर रहता है। बालक चलना, बोलना, खाना-पीना आदि परिवार में ही रहकर अनुकरण द्वारा सीखता है। कुछ और बड़ा होने पर सामाजिक व्यवहारों और अपने पैतृक व्यवसाय की भी शिक्षा उसे परिवार से ही मिलती है। अतः स्पष्ट है कि बालक की प्रारम्भिक शिक्षा परिवार या घर से ही आरम्भ होती है। इसीलिए तो सभी विद्वानों ने एकमत होकर परिवार या गृह को बालक की प्रथम पाठशाला कहाहै।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, December 2024

इस पर नीचे कुछ अधिक विस्तार में प्रकाश डाला जायेगा

परिवार या गृह बालक की शिक्षा की प्रथम पाठशाला के रूप में

परिवार या गृह को बालक की शिक्षा की प्रथम पाठशाला कहा जाना निर्विवाद रूप से सत्य है। परिवार में माँ ही एक ऐसी सदस्या है जिसके सम्पर्क में बालक सबसे अधिक रहता है। उसकी सेवा, सुरक्षा आदि का दायित्व मुख्यतः माँ पर ही होता है। माँ की प्रत्येक आदतों, कार्यों एवं व्यवहारों का बालक पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है। वह अनजान में ही उसके बहुत से गुणों को सीख लेता है। अतः माँ बालक की प्रथम शिक्षिका है। माँ के अतिरिक्त परिवार में अन्य सदस्य जैसे पिता, चाचा-चाची, दादा-दादी, भाई-बहन और नौकर-चाकर

आदि की आदतों, व्यवहारों और गुणों आदि का प्रभाव बालक पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। परिवार के क्रिया-कलाप, आदतें, भाषा, धर्म, आदर्शों और संस्कृति आदि सभी कुछ बालक धीरे-धीरे सीख लेता है। यह सब कुछ सीखने के लिए बालक को परिवार में विधिवत कोई शिक्षा नहीं दी जाती बल्कि इन्हें तो वह अपनी प्राकृतिक अथवा जन्मजात प्रवृत्तियों के कारण अनुकरण मात्र से ही सीखता है।

सर्वश्री आगबर्न तथा निमकॉफ ने परिवार के सात कार्य बतलाये हैं-

1. प्रेम सम्बन्ध कार्य, 2. रक्षा सम्बन्धी कार्य 3. आर्थिक कार्य, 4. मनोरंजन सम्बन्धी कार्य, 5. पारिवारिक स्थिति के निर्माण सम्बन्धी कार्य, 6. शैक्षिक कार्य, 7. धार्मिक तथा नैतिक कार्य।

इसके अतिरिक्त कुछ विद्वानों ने सामाजिक नियंत्रण तथा राजनीतिक कार्य भी बतलाये हैं। किन्तु वर्तमान युग में विषम सामाजिक परिस्थितियों, आर्थिक कठिनाइयों, विज्ञान की प्रगति, मशीनीकरण, औद्योगीकराण, आधुनिकीकरण, नगरीकरण और संचार सुविधाओं आदि के कारण परिवार के इन मूल कार्यों में से कुछ में तो परिवर्तन हो गया है और कुछ उत्तरदायित्व समाज एवं राज्य ने लिया है। किन्तु फिर भी परिवार के महत्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती क्योंकि समाज

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, December 2024

की आधारभूत और महत्वपूर्ण इकाई तो परिवार ही है। भले ही परिवार के कुछ कार्यों को समाज, राज्य तथा अन्य संस्थाओं ने संभाल लिया है किन्तु फिर भी बालक को जो प्यार, स्नेह, सहानुभूति और स्वतंत्रता घर में मिलती है और इनके बीच जैसी शिक्षा उसे प्राप्त होती है वह अन्यत्र दुर्लभ है। जीवन के आरम्भिक दिनों में घर ही बालक के लिए समुचित स्थान होता है और यही उसकी शिक्षा का स्रोत होता है। इस दृष्टि से घर बालकों की शिक्षा की एक उत्तम अविधिक संस्था है। शैशवकाल में बालक का मस्तिष्क अत्यधिक ग्रहणशील होता है। इस अवस्था में उसकी अनुरणात्मक प्रवृत्ति अत्यधिक तीव्र होती है और जो ज्ञान वह प्राप्त करता है, अधिक स्थायी होता है। जो आदतें, गुण एवं व्यवहार वह शैशवास्था में अपने परिवार से सीख लेता है वही उसके व्यक्तित्व निर्माण के मूल आधार बन जाते हैं। जितने भी आदर्श एवं महान व्यक्ति हुए हैं उनके व्यक्तित्व के निर्माण में सम्पूर्ण श्रेय उनके घर-परिवार से मिलने वाली शिक्षा का ही है। लेकिन यहाँ पर हमारे कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि परिवार से सदैव अच्छे गुणों की ही प्राप्ति होती है। वास्तव में अच्छे या बुरे जो भी गुण परिवार में होते हैं वे सभी बालक पर प्रभाव डालते हैं और इसी प्रभाव के कारण एक बालक दूसरे से भिन्न होता है। इसके समर्थन में रेमान्ट महोदय का कथन है कि "दो बालक भले ही एक विद्यालय में पढ़ते हों, एक ही समान शिक्षकों से प्रभावित होते हों, एक-सा ही अध्ययन करते हों, फिर भी वे अपने सामान्य ज्ञान, रुचियों, भाषण, व्यवहार तथा नैतिकता में अपने घरों के कारण जहाँ से वे आते हैं, भिन्न होते हैं।"

बालक के जीवन में परिवार का महत्वपूर्ण स्थान है, वास्तव में बालक की देख-रेख, पालन-पोषण के लिए परिवार से अच्छी कोई संस्था नहीं हो सकती है। भरिवारिक वातावरण में ही बालक की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। परिवार के हैक्षिक महत्व को स्पष्ट करते हुए विभिन्न शिक्षाशास्त्रियों ने अपने-अपने विचार कुछ इस प्रकार व्यक्त किये हैं-

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 7.53

Volume 4, Issue 2, December 2024

लॉरी के अनुसार, "शैक्षिक इतिहास के सभी स्तरों पर परिवार वालक की शिक्षाका प्रमुख साधन है।"

रूसो के अनुसार, "बालक की शिक्षा जन्म से ही प्रारम्भ हो जाती है एवं उसकी उपयुक्त परिचारिका उसकी माँ होती है।"

पेस्टालॉजी के अनुसार, "परिवार बालक के प्रेम व लगाव का केन्द्र है एवं यह बालक की शिक्षा का प्रथम सर्वोत्तम साधन है।"

मैजनी के अनुसार, "बालक नागरिकता का प्रथम पाठ माता के चुम्बन एवं पिता के संरक्षण के बीच सीखता है।"

मान्टेसरी के अनुसार, "इन्होंने छोटे बच्चों की शिक्षा के लिए घर के वातावरण और परिस्थिति को अति आवश्यक तत्व मानते हुए विद्यालय को 'बचपन का घर' की संज्ञा दी है।"

रेमाण्ट के अनुसार, "दो बच्चे एक समान विद्यालय में पढ़ सकते हैं तथा एक ही अध्यापक के प्रभाव में रहते हों एवं एक ही संगठन के सदस्य हों एवं समान अध्ययन में रत हों एवं समान अभ्यास कार्य करते हों परन्तु फिर भी वह अपने सामान्य ज्ञान, रुचियों, वाणी व नैतिक आचरण में एक-दूसरे से पूर्णतया भिन्न हो सकते हैं। चूंकि उनके ऊपर परिवार का प्रभाव होता है जिसके वह सदस्य हैं।" बालक की शिक्षा

में परिवार या घर का महत्व प्रस्तुत करते हुए बोगार्डस ने लिखा है कि "परिवार समूह मानव की प्रथम पाठशाला है। प्रत्येक व्यक्ति की अनौपचारिक शिक्षा सामान्य तथा परिवार में ही प्रारम्भ होती है, बालक का अत्यन्त महत्वपूर्ण शैक्षिक समय परिवार में ही व्यतीत होता है।"

कामेनियस (Comenius) ने परिवार को माँ के घुटनों का विद्यालय (The school of the mother's knee) कहा है।

मान्टेसरी (Montessori)ने छोटे बच्चों की शिक्षा के लिए घर को एक महत्वपूर्ण स्थान बतलाया है और इसीलिए अपने विद्यालय को बचपन का घर (Household of Childhood) कहा है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, December 2024

प्रकृतिवादी शिक्षा दार्शनिक रूसो (Roussou) ने बालक की शिक्षा में परिवार को बहुत ही महत्वपूर्ण माना है उनका मत है कि आधुनिक सभ्यता में केवल परिवारही मूल रूप से प्राकृतिक संस्था होने के नाते बालक को उत्तम प्रकार की शिक्षा प्रदान कर सकता है।

फोबेल ने भी परिवार को बालक की शिक्षा का अत्युत्तम साधन माना है। इसीलिए उन्होंने किंडरगार्टन पद्धति में बालक को घर जैसा वातावरण प्रस्तुत क इसीलिए उन्होया है। उनके विचार में मातायें आदर्श अध्यापिकाएँ हैं और घर द्वारा प्रदान की जाने वाले अविधिक शिक्षा सबसे अधिक प्रभावशाली और स्वभाविक होती है।"

रेमान्ट का विचार है "घर ही वह स्थान है जहाँ वे महान गुण उत्पन्न होते हैंजिसकी सामान्य विशेषता सहानुभूति है घर में ही घनिष्ठ प्रेम की भावनाओं का विकाय होता है। हीं बालक उदारता और अनुदारता, निस्वार्थक, स्वार्थ, न्याय, अन्याय, सत्य व असत्य, परिश्रम एवं आलस्य में अन्तर सीखता है यहीं उसमें इनमें से कुछ भी आदत सबसे पहले पड़ती है।"

पेस्टालॉजी ने परिवार या घर को बालक की शिक्षा का सर्वोत्तम स्थान और माँ को शिक्षा का वास्तविक स्रोत बतलाया है। उनका कथन है कि, "घर ही शिक्षा का
सर्वोत्तम स्थान एवं बालक की प्रथम पाठशाला है।"

उपर्युक्त विभिन्न विद्वानों के विचारों से यह पूर्णरूपेण स्पष्ट है कि बालक की शिक्षा में परिवार या गृह का कितना महत्वपूर्ण स्थान है। अब हम नीचे परिवार केशैक्षिक कार्यों का उल्लेख करेंगे जिससे इसका महत्व और भी प्रकट होता है।

परिवार के शिक्षा सम्बन्धी कार्य

परिवार के तीन प्रमुख कार्य होते हैं-शिशुओं का पालन-पोषण करना, आर्थिक कार्य और शैक्षिक कार्य। यहाँ पर उसके शैक्षिक कार्यों की ही चर्चा की जा रही है। परिवार अपने शैक्षिक कार्य

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, December 2024

समाजीकरण की प्रक्रिया एवं बालक के विकास में सहयोग देकर पूरा करता है। यद्यपि इसके शैक्षिक महत्व को किसी भी देश तथा किसी भी युग में नकारा नहीं जा सकता है, फिर भी देश व काल की परिस्थिति के अनुसार इसके शैक्षिक प्रभाव में भिन्नता होती रहती है। उदाहरण के लिए प्राचीन काल में हमारे देश में परिवार ही बालकों की प्राथमिक शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा के केन्द्र थे लेकिन वर्तमान समय में स्थिति में परिवर्तन हो गया है। वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान को जटिलता एवं औद्योगिक प्रगति के कारण परिवार अब व्यवसायिक और औद्योगिक शिक्षा देने में सक्षम नहीं रहे हैं। प्रारम्भिक शिक्षा का उत्तरदायित्व भी शतैः-शनैः शिशु विद्यालय व डे बोर्डिंग स्कूल लेते जा रहे हैं परन्तु परिवार का अभी भी अत्यधिक शैक्षिक महत्व है और उसकी शैक्षिक भूमिका सराहनीय होती है।

संक्षेप में परिवार के शिक्षा-सम्बन्धी कार्यों को निम्न बिन्दुओं में बांटा जा सकता है-

(क) **शारीरिक विकास सम्बन्धी कार्य-**स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। परिवार शिशु के शारीरिक विकास और सुरक्षा के उत्तरदायित्व का निर्वाह करता है। वह शिशु को संतुलित भोजन, व्यायाम, विश्राम स्वास्थ्य-सफाई और सुरक्षा देने का कार्य करता है। बच्चों में नियमित दिनचर्या, सफाई की आदत, भोजन करने के ढंग आदि सिखाकर शारीरिक विकास में अभूतपूर्व योगदान करता है।

(ख) **मानसिक विकास का कार्य-**बालक के मानसिक विकास में परिवार प्रथम तथा महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। इसीलिए परिवार को बालक की प्रथम पाठशाला कहा जाता है। बालक परिवार के सदस्यों से अनुकरण द्वारा बोलना, चलना-फिरना, वस्तुओं को पहचाना, परिवार के सदस्यों की पहचान, समय व दूरी के बारे में सीखता है। अतः परिवार के सदस्यों को अपनी भाषा, बोलने के ढंग, पढ़ने-लिखने की आदतों पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि बच्चे जैसे देखते हैं वैसा ही सीखते हैं। उदाहरण के लिए यदि परिवार के सदस्य परस्पर बातचीत में किसी शब्द का बार-बार

प्रयोग करते हैं या अश्लील शब्दों को बोलते हैं या बच्चों से तुतलाकर बोलते हैं तो इन सबका बच्चे के मानसिक विकास पर अनुचित प्रभाव पड़ता है। बच्चों से कभी व्यंग्यात्मक तरीके से नहीं बोलना चाहिए, क्योंकि जो कुछ बोला जाता है उसका सीधा अर्थ ही वे ग्रहण करते हैं। वह परिवार में शीघ्र ही सीख लेता है। कि उससे किस स्तर के व्यवहारिक अनुकरण और दृढ़ता की अपेक्षा की जा रही है।

(ग) **भावात्मक विकास का कार्य-**परिवार में रहकर ही बच्चा अनेक मानवीय गुणों, आदर्शों, भावों और जीवन मूल्यों को आत्मसात् करता है। बालक के चरित्र-निर्माण में प्रथम प्रभाव परिवार का होता है। उसमें विभिन्न गुणों, प्रेम, सहानुभूति, दया, ईमानदारी, सत्यता, सहिष्णुता, न्याय, सम्मान आदि का बीजारोपण परिवार करता है। परिवार के सदस्यों का एक दूसरे के प्रति प्रेम और अपने स्वार्थों का परित्याग, वयोवृद्धों का सम्मान एवं सेवा, रोगियों की सुश्रुवा जैसे कार्य बालकों के भावात्मक विकास में सहायक होते हैं।

(घ) **आदतों और दृष्टिकोण का विकास-**परिवार बालकों में अच्छी आदतों का विकास करता है और विभिन्न परिस्थितियों तथा लोगों के प्रति समुचित दृष्टिकोण का विकास करता है। विविध आदतें जैसे भोजन व शयन की उचित आदतें, बातचीत व शिष्टाचार, समय व धन का सदुपयोग, घर की सफाई व सुन्दरीकरण की आदत परिवार में विकसित होती है।

(ङ) **संवेगात्मक विकास-**परिवार बालक के अंदर स्वस्थ व संतुलित संवेगों का विकास करता है। मनुष्य के जन्मजात संवेग अनगढ़ और पाश्विक होते हैं। परिवार केसदस्यों द्वारा बच्चे के विभिन्न संवेगों, प्रेम, क्रोध, घृणा आदि का मार्गान्तरीकरण और शोधन किया जाता है। भिन्न-भिन्न सामाजिक परिस्थितियों में संवेगों का प्रकाशन किस प्रकार करना चाहिए, यह बालक परिवार में सीखता है। परिवार के सदस्यों का परस्पर प्रेम, बुरी चीजों के प्रति घृणा, अन्याय के प्रति क्रोध बच्चों के संकुचित संवेगात्मक विकास में सहायता करते हैं। वह दीन-दुखियों के प्रति संवेदना, दुःख

में सहानुभूति प्रकट करना सीखता है। क्रोध पर नियंत्रण रखना भी वह परिवारजनों से सीखता है। इसके विपरीत क्रोधावेश में संतुलन खो देना या बात-बात पर झूठ बोलने का अभ्यास भी बालक परिवार में सीखता है। माता-पिता के आपसी कटु सम्बन्ध, दादा-दादी, नाना-नानी का अनुशासन में अनुचित हस्तक्षेप बालकों के संवेगात्मक विकास को गलत दिशा दे सकता है।

(च) **सामाजिक व सांस्कृतिक विकास**-परिवार मनुष्य के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसी में बालक विभिन्न सामाजिक परम्पराओं, त्यौहारों आदि का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करता है। परिवार एक सामाजिक संस्था के रूप में समाज की अन्य संस्थाओं से अन्तर्क्रिया करता है और अन्तर्सम्बन्धों का विकास करता है। समाज के भिन्न-भिन्न जाति, सम्प्रदाय, वर्गों के लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? इसकी शिक्षा परिवार प्रारम्भ में देता है। परिवार का यह उत्तरदायित्व है कि वह बालक के मन में प्रारम्भ से ही जाति, धर्म, ऊँच-नीच, छुआ-छूत के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास करे तभी सामाजिक समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

(छ) **व्यावहारिक व व्यावसायिक शिक्षा** - यद्यपि वर्तमान में परिवार व्यावसायिक शिक्षा देने का कार्य नहीं करता है क्योंकि अब व्यवसाय का चयन बालक पारम्परिक रूप से न करके अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार करते हैं इसके अतिरिक्त व्यावसायिक शिक्षा अधिक विशिष्ट हो गई है जिसकी शिक्षा परिवार देने में अक्षम है। फिर भी परिवार बच्चों के मन में विभिन कार्यों और व्यवसायों के प्रति उचित दृष्टिकोण का निर्माण करता है। श्रम के प्रति सकारात्मक रुझान, समय की पाबन्दी, आय-व्यय का सही हिसाब रखना, लगन के साथ कार्य करना जैसी आदतों का विकास परिवार करता है जो व्यक्ति के व्यावसायिक जीवन में लाभ पहुँचाती हैं।

(ज) **विद्यालय के लिए तैयारी** - आधुनिक युग में परिवार का एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है बच्चों को विद्यालय के लिए तैयार करना। जब बच्चा पूर्व प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लेता है

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, December 2024

तब वह अस्पष्टता, असमंजस, पराश्रयता, भय और नासमझी की स्थिति में रहता है। परिवार धीरे-धीरे बच्चे के मन में आशंकाओं को दूर करता है और विद्यालय के प्रति उसके मन में विश्वास उत्पन्न करता है और अनावश्यक तनावों और भय से मुक्त रखता है। परिवार बच्चे की विद्यालय सम्बन्धी विविध आवश्यकताओं तथा यूनिफ़ॉर्म, पुस्तके, स्टैशनेरी आदि की पूर्ति करता है।

संदर्भ :

1. भारत मे शिक्षा का विकास - गुरुसरणदास त्यागी
2. बाल मनोविज्ञान - डॉ ममता
3. अधिगम विकास - डॉ मृदुला
4. शिक्षा का महत्व - के. के. शर्मा